सूरह — एक कहानी

सूरह अज़-ज़लज़ला

ज़लज़ला

पूरा सफ़र — ज़मीन अपनी ख़बर सुनाएगी —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 99 • 8 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इज़ा ज़ुल्ज़िलतिल्-अर्ज़ु ज़िल्ज़ालहा
1. जब ज़मीन अपने ज़लज़ले से हिला दी जाएगी।

व अख़्रजतिल्-अर्ज़ु अस्क़ालहा
2. और ज़मीन अपने बोझ निकाल फेंकेगी।

यौम-इज़िन तुहद्दिसु अख़्बारहा
4. उस दिन वो अपनी ख़बरें सुनाएगी।

फ़-मंय्-य'मल मिस्क़ाल ज़र्रतिन ख़ैरंय्-यरह
7. तो जिसने ज़र्रा बराबर नेकी की, वो उसे देख लेगा।

व मंय्-य'मल मिस्क़ाल ज़र्रतिन शर्रंय्-यरह
8. और जिसने ज़र्रा बराबर बुराई की, वो उसे देख लेगा।

बि-अन्न रब्बक औहा लहा
5. क्योंकि आपके रब ने उसे हुक्म दिया होगा।

ज़मीन ख़ुद तड़प उठेगी

बेटा, यह सूरह सिर्फ़ आठ आयतों की है, और नबी ﷺ ने फ़रमाया कि यह मानी के ए'तिबार से आधे क़ुरआन के बराबर है। इसे आहिस्ता पढ़िए, आपको वजह समझ आ जाएगी।

'इज़ा ज़ुल्ज़िलतिल्-अर्ज़ु ज़िल्ज़ालहा — जब ज़मीन अपने ज़लज़ले से हिला दी जाएगी।'

बेटा, इज़ाफ़त ग़ौर से देखिए: 'ज़िल्ज़ालहा' — उसका अपना ज़लज़ला। कोई ज़लज़ला नहीं, बल्कि वो ज़लज़ला जो ज़मीन का अपना है — जो हमेशा से आने वाला था, आख़िरी और मुकम्मल। तारीख़ का हर झटका एक छोटी तंबीह था; यह पूरे सय्यारे का एक साथ तड़पना है।

'व अख़्रजतिल्-अर्ज़ु अस्क़ालहा — और ज़मीन अपने बोझ निकाल फेंकेगी।' 'अस्क़ाल'

का मतलब है भारी बोझ। और ज़मीन के भारी बोझ क्या हैं, बेटा? वो सब कुछ जो वो शुरू से अपने अंदर उठाए फिर रही है: हर क़ौम के दफ़्न शुदा मुर्दे, छुपे हुए ख़ज़ाने, पोशीदा शहादतें, वो जिस्म जो कभी किसी को मिले ही नहीं। सब का सब बाहर फेंक दिया जाएगा।

'व क़ालल्-इंसानु मा लहा — और इंसान कहेगा: इसे क्या हो गया?'

बेटा, इस रद्द-ए-अमल में कुछ बे-बस सी बात है। इंसान — जिसे इस दिन के बारे में हर किताब में, हर रसूल के ज़रिए, हज़ारों साल से आगाह किया गया — ज़मीन को उबलते देख कर हैरान हो कर पूछेगा: इसे क्या हो रहा है? गोया यह ग़ैर-मुतवक़्क़ो हो। ग़फ़लत की ज़िंदगी यही करती है: तारीख़ का सबसे ज़्यादा बताया गया वाक़िआ भी अचानक का सदमा बन जाता है।

ज़मीन अपनी ख़बर सुनाएगी

और अब बेटा, वो आयत आती है जिसे आपके हर उस जगह के रवैये को बदल देना चाहिए जहाँ आप क़दम रखते हैं: 'यौम-इज़िन तुहद्दिसु अख़्बारहा — उस दिन वो अपनी ख़बरें सुनाएगी।'

ज़मीन बोलेगी। वो अपनी ख़बर देगी — 'अख़्बार', अपनी रिपोर्ट, हर चीज़ का अपना बयान।

नबी ﷺ ने इस आयत की ख़ुद तफ़्सीर फ़रमाई। आप ﷺ ने इसे पढ़ा और पूछा: क्या तुम जानते हो उसकी ख़बरें क्या हैं? सहाबा ने कहा: अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानते हैं। आप ﷺ ने फ़रमाया: 'उसकी ख़बर यह है कि वो हर बंदे और बंदी के ख़िलाफ़ गवाही देगी कि उसने उसकी सतह पर क्या किया। वो कहेगी: इसने फ़लाँ दिन फ़लाँ काम किया। यही उसकी ख़बर है।'

बेटा, इसे ज़ेहन में उतारिए। जिस ज़मीन पर आप इस वक़्त बैठे हैं, वो नोट्स ले रही है। हर जगह का अपना हाफ़िज़ा है: मस्जिद का वो फ़र्श जहाँ आपने रात को नमाज़ पढ़ी, और वो कमरा भी जहाँ आपने वो बात कही जो नहीं कहनी चाहिए थी। वो गली जहाँ

आपने किसी की मदद की, और वो जगह जहाँ आपने बे-ईमानी की। उस दिन ज़मीन का हर टुकड़ा खड़ा हो कर गवाही देगा: यहाँ, इस तारीख़ को, यह हुआ था।

इसी लिए बाज़ सलफ़ मुख़्तलिफ़ जगहों पर नमाज़ पढ़ते थे, और इसी लिए कहा जाता है कि मोमिन को अपने पीछे ज़मीन के ऐसे टुकड़े छोड़ कर जाने चाहिए जो उसके हक़ में बोलें।

'बि-अन्न रब्बक औहा लहा — क्योंकि आपके रब ने उसे हुक्म दिया, इल्हाम किया होगा।' ज़मीन अपने आप से गवाही नहीं दे रही, बेटा — अल्लाह उसे इजाज़त देते हैं और हुक्म देते हैं। बे-जान चीज़ें उस वक़्त बोलती हैं जब उनका ख़ालिक़ उन्हें कहता है।

बिखरे हुए गिरोह, अपने अमल दिखाए जाएँगे

'यौम-इज़िंय्-यस्दुरुन्-नासु अश्तातल्-लि-युरौ अ'मालहुम — उस दिन लोग अलग अलग, बिखरे हुए गिरोहों में निकलेंगे, ताकि उन्हें उनके अमल दिखाए जाएँ।'

बेटा, 'यस्दुरु' वो लफ़्ज़ है जो पानी के घाट से लौटने वालों के लिए इस्तेमाल होता है — कुएँ से पानी पी कर वापस आना। तो इंसानियत को क़ब्रों से निकलते हुए यूँ तसव्वुर कीजिए जैसे भीड़ कुएँ से लौटती है: गिरोहों में उमड़ती हुई, मगर 'अश्तातन' — अलग अलग, छँटी हुई, हर एक अपनी क़िस्म के साथ।

इस दुनिया में, बेटा, हम सब गड्ड-मड्ड हैं: ईमानदार और बे-ईमान एक ही दफ़्तर में बैठते हैं, एक ही ट्रेन में सफ़र करते हैं, एक ही गली में रहते हैं। उस दिन यह मिलावट ख़त्म हो जाएगी। हर जान अपनी क़िस्म के साथ जाएगी, और छँटाई अमल से होगी, ख़ानदानी नाम या पासपोर्ट से नहीं।

'लि-युरौ अ'मालहुम' — ताकि उन्हें उनके अमल दिखाए जाएँ। बताए नहीं जाएँ — दिखाए जाएँ। बेटा, यही चीज़ उस दिन को इतना क़तई बना देती है। कोई ख़ुलासा नहीं, कोई बहस नहीं, वाक़िआत का कोई अपना वर्ज़न नहीं। ख़ुद अमल सामने रख दिया जाएगा। हर इंसान अपनी ज़िंदगी को दोबारा चलता हुआ देखेगा।

ज़र्रा बराबर

और अब बेटा, वो दो आयतें आती हैं जिन्हें उलमा 'क़ुरआन की सबसे जामे आयतें' कहते हैं — इब्ने अब्बास (रज़ि0) ने फ़रमाया कि पूरी किताब में इन दो से ज़्यादा जामे कोई आयत नहीं:

'फ़-मंय्-य'मल मिस्क़ाल ज़र्रतिन ख़ैरंय्-यरह — तो जिसने ज़र्रा बराबर नेकी की, वो उसे देख लेगा — व मंय्-य'मल मिस्क़ाल ज़र्रतिन शर्रंय्-यरह — और जिसने ज़र्रा बराबर बुराई की, वो उसे देख लेगा।'

बेटा, 'मिस्क़ाल ज़र्रह' — सबसे छोटे ज़र्रे का वज़न, वो धूल का ज़र्रा जो सूरज की किरन में नज़र आता है। और अल्लाह फ़रमा रहे हैं: वही भी लिखा गया, महफ़ूज़ रखा गया, और आपको दिखाया जाएगा।

अब सोचिए कि ये दो आयतें एक ज़िंदगी के साथ क्या करती हैं। ये इस सोच को ही ख़त्म कर देती हैं कि कोई अमल 'इतना छोटा है कि कोई बात नहीं'।

नेकी की तरफ़, बेटा — यह आम लोगों के लिए क़ुरआन की सबसे हौसला-अफ़ज़ा आयत है। हो सकता है आप कभी मस्जिद न बनाएँ, किसी क़ौम को आज़ादी न दिलाएँ। मगर आपने रास्ते से एक पत्थर हटाया। आपने एक थके हुए दुकानदार को देख कर मुस्कुराहट दी। आपने किसी को पानी पिलाया। आपने काँच का टुकड़ा उठा लिया ताकि कोई बच्चा उस पर पाँव न रखे। आपने किसी के लिए दुआ की जिसे कभी पता नहीं चलेगा। आपने अपनी ज़ुबान रोक ली जब आपके पास एक तबाह कर देने वाला जवाब तैयार था।

इनमें से हर एक ज़र्रा बराबर नेकी है, और इनमें से हर एक वहाँ मौजूद होगी — नज़र आती हुई, गिनी हुई, आपका इंतिज़ार करती हुई।

और दूसरी तरफ़, बेटा — यह 'यह तो छोटा सा गुनाह है' वाला बहाना ख़त्म कर देती है। वो नज़र जो आपने दो सेकंड ज़्यादा ठहर जाने दी। वो जुमला जो आपने किसी की इज़्ज़त के बारे में गुफ़्तगू में बढ़ा दिया। वो छोटा झूठ जिसने कहानी को बेहतर बना दिया। बिल में बढ़ाया गया थोड़ा सा हिसाब। छोटा — और दिखाया जाने वाला।

नबी ﷺ ने ठीक इसी के बारे में ख़बरदार किया: 'उन छोटे गुनाहों से बचो जिन्हें हक़ीर समझा जाता है, क्योंकि वो आदमी पर जमा होते रहते हैं यहाँ तक कि उसे हलाक कर देते हैं।' आप ﷺ ने इन्हें उस क़ाफ़िले से तशबीह दी जो किसी वादी में उतरा हो और हर शख़्स एक एक लकड़ी ले आए — यहाँ तक कि उनके पास खाना पकाने के लिए काफ़ी हो जाए। एक लकड़ी कुछ भी नहीं; ढेर एक आग है।

बेटा, और इन दो आयतों की तरतीब में एक रहमत छुपी है। देखिए पहले क्या आया: नेकी का ज़र्रा। अल्लाह ने अज्र का ज़िक्र सज़ा से पहले किया — जैसा वो अक्सर करते हैं। पूरे हिसाब-किताब वाली आयत में भी उन्होंने ख़ुशख़बरी से शुरुआत की।

और इसी लिए जब एक देहाती ने नबी ﷺ को ये दो आयतें पढ़ते सुना, तो उसने कहा: 'मेरे लिए यही काफ़ी है' — और चला गया। वो सब कुछ समझ गया था।

तो यही सूरह है, बेटा, एक ख़याल में: ज़मीन रिकॉर्ड कर रही है, ज़मीन गवाही देगी, आपके अमल दिखाए जाएँगे, और कोई चीज़ इतनी छोटी नहीं जो सामने न आए। ऐसे जिए कि हर ज़र्रा गिनती में है — क्योंकि अल्लाह ने ख़ुद आपको बता दिया है कि वो है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. तारीख़ का सबसे ज़्यादा बताया गया वाक़िआ भी ग़ाफ़िल को सदमे की तरह मिलेगा — 'इसे क्या हो गया?'

2. ज़मीन रिकॉर्ड करती है: हर वो जगह गवाही देगी जहाँ आपने कुछ किया। अपने पीछे ऐसी ज़मीन छोड़िए जो आपके हक़ में बोले।

3. अच्छों और बुरों की मिलावट उस दिन ख़त्म — हर जान अपनी क़िस्म के साथ, और छँटाई सिर्फ़ अमल से।

4. आपको अमल दिखाए जाएँगे, सिर्फ़ बताए नहीं — उस मंज़र से बहस मुमकिन नहीं।

5. कोई नेकी इतनी छोटी नहीं कि गिनी न जाए: एक मुस्कुराहट, हटाया हुआ पत्थर,

एक ख़ामोश दुआ — सब दर्ज, सब महफ़ूज़।

6. कोई गुनाह इतना छोटा नहीं कि सामने न आए: उन हक़ीर समझे गए गुनाहों से बचिए जो लकड़ियों की तरह जमा हो कर आग बन जाते हैं।

7. अल्लाह ने नेकी के ज़र्रे का ज़िक्र पहले किया — हिसाब की इब्तिदा उम्मीद से कीजिए, फिर एहतियात से अमल।

या अल्लाह, ज़मीन को हमारे हक़ में गवाह बनाइए, हमारी नेकियों के ज़र्रों को बढ़ा दीजिए, और वो छोटे गुनाह माफ़ फ़रमाइए जिन्हें हम हक़ीर समझते रहे। आमीन।